Ramakrishna Paramahamsa

569
139

समाज विकासमाला

रामकृष्ण परमहंस

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

ರಾಮಕೃಷ್ಣ ಪರಮಹಂಸ.
1576

समाज-विकास-माला : ५३

GANDHI PEACE FOUNDATION
MYSORE CENTRE
162. RAMAVILAS ROAD
MYSORE-1

रामकृष्ण परमहंस

जीवन-परिचय और उपदेश

ಗಾಂಧಿ ಸ್ಮಾರಕ ನಿಧಿ
ಮೈಸೂರು
ನಂ. 569
139
ತತ್ವ ಪ್ರಚಾರ ಕೇಂದ್ರ

लेखक
विष्णुदत्त 'विकल'

संपादक
यशपाल जैन

ಕರ್ನಾಟಕ ಗಾಂಧೀ ಸ್ಮಾರಕ ನಿಧಿ (ರಿ)
ಪರಿಗ್ರಹಣ ಸಂಖ್ಯೆ:
ACC. No.: 9704
ಗಾಂಧೀ ಗ್ರಂಥಾಲಯ, ಬೆಂಗಳೂರು-1

१९५७
सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

दूसरी बार : १९५७
मूल्य
छः आना

मुद्रक
हिंदी प्रिंटिंग प्रेस
दिल्ली

1576
GANDHI PEACE FOUNDATION
MYS...
162. ...OAD
MYS...-1

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने ग्राज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों ग्रादमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ग्रोर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही ग्रासान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार ग्रौर बोलचाल की हो ग्रौर जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी ग्रासान है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय ग्रौर छपाई में किसी सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

दूसरा संस्करण

बड़े हर्ष की वात है कि इस पुस्तक का दूसरा संस्करण इतनी जल्दी प्रकाशित हो रहा है। इस माला की सभी पुस्तकें पाठकों को पसंद ग्रा रही हैं, इससे हमें बड़ा ग्रानंद होता है। हमें विश्वास है कि इन सामयिक ग्रौर उपयोगी पुस्तकों को पाठक चाव से पढ़ेंगे ग्रौर इनके प्रचार में हाथ बटाएंगे।

—मंत्री

पाठकों से

इस माला में आप कई संतों और ईश्वर-भक्तों से परिचय कर चुके हैं, उनके उपदेश पढ़ चुके हैं। लीजिए, इस पुस्तक में रामकृष्ण परमहंस की संक्षिप्त जीवनी और उनके कुछ चुने हुए उपदेश पढ़ लीजिए। परमहंस ऊंचे दर्जे के भक्त थे और भक्ति-रस की उन्होंने ऐसी गंगा बहाई कि आज भी उसके पवित्र जल में लोग डुबकी लगाकर बड़ा आनंद पाते हैं। उनके उपदेश भी बड़े मूल्यवान हैं। एक-एक वचन मननीय है।

आप इस पुस्तक को पढ़ें। जितनी बार पढ़ेंगे, उतना ही आपको इसमें रस आवेगा।

—संपादक

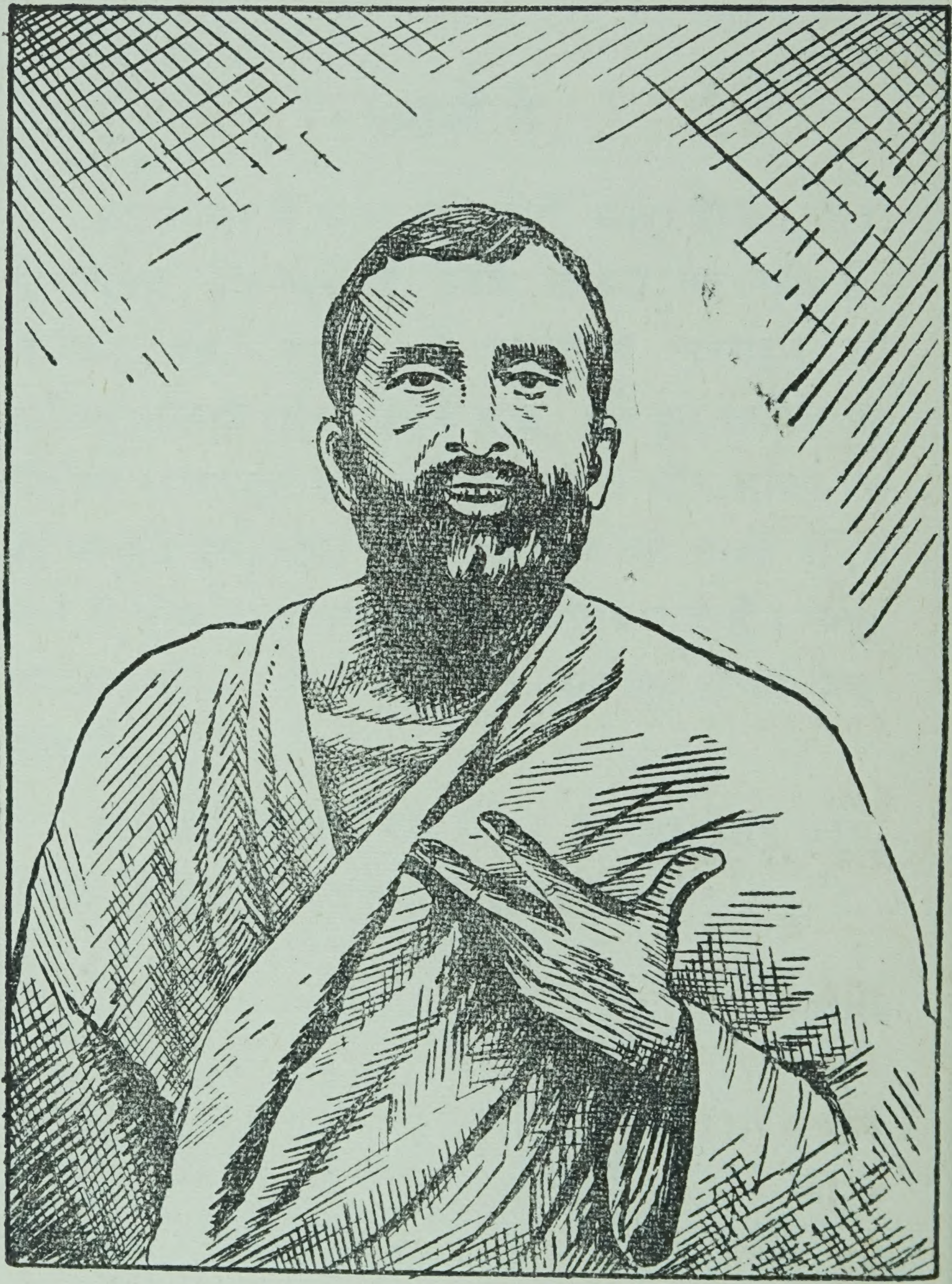

रामकृष्ण परमहंस

रामकृष्ण परमहंस

: १ :

रामकृष्ण परमहंस कौन थे ?

पश्चिमी बंगाल के हुगली जिले में एक गांव है कामारपुकुर। वहां खुदीराम चट्टोपाध्याय नाम के एक ब्राह्मण रहते थे। उनकी पत्नी का नाम था चन्द्रमणि। दोनों पति-पत्नी भगवान् के बड़े भक्त थे। ये ही रामकृष्ण परमहंस के माता-पिता थे। रामकृष्ण का जन्म फाल्गुन सुदी दूज, संवत् १९०० में हुआ। इनका घर का नाम गदाधर था। रामकृष्ण नाम तो बाद में गुरू ने रखा।

बचपन में रामकृष्ण परमहंस बहुत सुंदर थे। गांव के लोग उन्हें बड़ा प्यार करते। कुछ बड़े होने पर उन्हें गांव की पाठशाला में भर्ती करा दिया गया। लेकिन पाठशाला में उनका मन न लगा। वह कहते थे कि पेट भरने की विद्या पढ़कर क्या होगा ? वह भक्ति के गीत गाया करते थे।

रामकृष्ण का लालन-पालन थोड़े दिनों तक धनी

नाम की बुढ़िया ने किया। जात की वह लुहारन थी। जब रामकृष्ण का जनेऊ हुआ तो धनी ने सबसे पहले भिक्षा दी। उसी दिन से धनी लुहारन रामकृष्ण की भिक्षा-माता बन गई।

कलकत्ता शहर के दक्षिणी हिस्से में एक जगह का नाम है दक्षिणेश्वर। रानी रासमणि ने वहां काली का एक बड़ा भारी मंदिर बनवाया था। राधाकृष्ण की मूर्तियां भी उस मंदिर में थीं। मंदिर के पुजारी रामकृष्ण के बड़े भाई रामकुमार थे। कुछ दिनों बाद रामकृष्ण भी अपने भाई के पास चले आए। इन्हें राधाकृष्ण के श्रृंगार की सेवा दी गई। रामकृष्ण सच्चे पुजारी थे। काली के मंदिर में जब वह जाते तो बड़े प्रेम से पूजा करते। शाम की आरती के बाद मां काली के सामने बैठकर घंटो रोया करते। कहते, "मां, मैं अनपढ़ हूं। मुझे पूजा करने का ढंग नहीं आता। हे मां! मुझे दर्शन दो। मुझे धन-दौलत नहीं चाहिए।"

इस प्रकार रामकृष्ण रात-दिन काली की भक्ति में लगे रहते। धीरे-धीरे उनकी हालत पागलों जैसी हो गई। संसार की चीजों में उनका मन नहीं लगता था। एक दिन मां काली से बहुत देर तक प्रार्थना

करते रहे। जब काली के दर्शन नहीं हुए तो पास ही टंगी हुई तलवार निकाल ली। ज्योंही वह तलवार से अपना घात करने लगे, मां काली ने उन्हें दर्शन दिए।

रामकृष्ण लगभग छः महीने तक इसी दशा में रहे। जब हालत ठीक हुई तो वह अनेक प्रकार से साधना करने लगे। अभिमान उनसे दूर था, फिर भी वह मां काली से प्रार्थना करते—"मां, मेरे अभिमान को जला दो। ब्राह्मण, क्षत्रिय, डोम, चमार और भंगी, ये सब एक ही भगवान के अंग हैं। मेरा सबमें समान भाव हो। जिसमें अभिमान है वह भगवान् का भक्त कैसे हो सकता है?"

वह कभी-कभी ऐसे काम भी कर बैठते, जिनसे लोग उन्हें बुरा-भला कहते। लेकिन उनके मन पर जरा भी असर न पड़ता। लोग समझते कि रामकृष्ण पागल होगए हैं। कोई कहता कि उन्हें भूत-प्रेत लग गया है। कोई कुछ कहता। रामकृष्ण सुनकर हँस देते।

रामकृष्ण परमहंस को धन और स्त्री से मोह न था। एक दिन उन्होंने एक हाथ में रुपया लिया दूसरे हाथ में मिट्टी। अपने मन से बोले, "ओ मेरे मन, बता इस रुपये और मिट्टी में क्या भेद है! मिट्टी अनाज

पैदा करती है। रुपया न तो खाया जाता है, न पहना जाता है।"

इन दिनों वह मां काली की पूजा करते-करते होश में नहीं रहते थे। लोग उन्हें अचेतन अवस्था में उठाकर लाते। वैद्य और डाक्टरों ने उन्हें देखकर वायुरोग बताया। कुछ बूढ़ों ने कहा कि इन्हें जवानी की खुमारी चढ़ गई है। उनके कहने पर एक दिन रामकृष्ण के कमरे में रात के समय बाजारू औरत भेज दी गई। जब वह कमरे में पहुंची तो रामकृष्ण दूसरे कमरे में चले गए। वह नारी को मां काली के रूप में मानते थे।

कुछ दिनों बाद एक वैद्य ने रामकृष्ण परमहंस की जांच की। उन्होंने कहा, "रामकृष्ण को न तो वायु-रोग है और न कोई बीमारी है। ये तो बहुत बड़े योगी हैं। इन्हें जब मां काली का ध्यान आता है तो मस्ती में बेहोश हो जाते हैं।" लेकिन वैद्य की बात पर किसीको विश्वास नहीं हुआ।

जब रामकृष्ण परमहंस तेईस वर्ष के हो गए तो इनके विवाह की बात चली। रामकृष्ण चुपचाप सब-कुछ सुनते रहे। जयरामबाटी नाम का एक गांव था। वहां रामचंद्र मुखोपाध्याय नामक एक ब्राह्मण रहते

थे। उनकी एक कन्या थी शारदामणि। रामकृष्ण का विवाह शारदामणि से होगया। शारदामणि विवाह के बाद कुछ दिन ससुराल में रहकर अपने मायके चली गईं।

कई साल के बाद रामकृष्ण परमहंस अपनी ससुराल गए। उस समय शारदामणि की उम्र कुल सोलह साल की थी। बंगाल में काली के उपासक षोडशी पूजा किया करते हैं। रामकृष्ण परमहंस एक साड़ी, एक शंख और एक माला लेकर ससुराल पहुंचे। सीधे उपांगन में चले गए। उस समय शारदामणि आंगन में कुछ काम कर रही थीं। उन्होंने देखा कि एक पागल दरवाजे पर आकर खड़ा होगया है। वह पागल टकटकी लगाकर उनकी ओर देख रहा है। शारदामणि भीतर चली गईं और अपनी मां को बुला लाईं। मां पहले तो अपने जामाता को पहचान न सकीं। बाद में पहचाना तो रामकृष्ण की दशा देखकर पछाड़ खाकर गिर गईं। उन्हें लगा कि उनका दामाद पागल होगया है।

कुछ देर बाद रामकृष्ण ने एक चौकी मंगवाई। चौकी पर पत्नी को खड़ा किया। फिर बेलपत्र और फूल चढ़ाकर पूजा की। पूजा के बाद जप करने की माला भी चरणों पर चढ़ा दी। इस प्रकार उन्होंने

जप-तप समाप्त कर दिया। इसके बाद उन्होंने पत्नी को माता के पद पर बिठा दिया। मां को बहुत दुःख हुआ। रामकृष्ण कलकत्ता लौट आए।

जब शारदामणि की उम्र अठारह साल की हुई तो उन्होंने अपने पति के पागलपन की बहुत-सी बातें सुनीं। आखिर एक दिन वह गांव के कुछ लोगों के साथ अपने पति के पास पहुंच गईं।

रामकृष्ण ने उन्हें भली-भांति समझा दिया कि उनकी साध केवल भजन करने की है। वह अपने पति को ठीक तरह पहचान गईं।

कहते हैं कि रामकृष्ण ने मां काली से प्रार्थना की कि हे माता, शारदामणि के मन में काम-भावना का उदय न हो। उनकी यह भावना पूरी होगई।

शारदामणि रात-दिन अपने पति की सेवा में लगी रहतीं। एक दिन उन्होंने रामकृष्ण से पूछा, "बताइए मैं कौन हूं?"

"तुम मेरी माता हो। एक मां ने मुझे जन्म दिया। एक मां काली-मंदिर में विराजमान है। एक मां रात-दिन मेरी टहल में लगी रहती है।"—रामकृष्ण ने प्रसन्न होकर जवाब दिया।

एक बार तोतागिर नामक एक योगी कलकत्ता

पधारे। वह बड़े विद्वान संन्यासी थे। तोतागिरि ने साधनों के बल पर बहुत ऊंचा पद पा लिया था। वेदांत के पंडित थे। तोतागिरि जब दक्षिणेश्वर गए तो रामकृष्ण पर उनकी निगाह पड़ी। उस समय गंगा-तट पर रामकृष्ण एक धोती पहने बैठे थे। उनका तेज-पूर्ण चेहरा देखकर तोतागिरि ने समझ लिया कि वह बहुत बड़ा साधक है। इससे बढ़कर वेदांत का अधिकारी और कोई नहीं हो सकता। उन्होंने शुभ महूर्त्त में रामकृष्ण को दीक्षा दी। शिखा-सूत्र का त्याग कर दिया। अब रामकृष्ण परमहंस संन्यासी बन गए।

तोतागिरि ने उन्हें समाधि लगाना सिखाया। जिस समाधि को तोतागिरि ने चालीस साल साधना करके सीख था, रामकृष्ण ने उसे बात-की-बात में सीख लिया। जब रामकृष्ण ने समाधि लगाई तो तोतागिरि कमरे में ताला लगाकर बाहर बैठ गए। उन्होंने सोचा कि जब रामकृष्ण कहेंगे तब दरवाज़ा खोल देंगे। मगर जब तीन दिन बीत गए और अंदर से आवाज़ न आई, तो तोतागिरि ने अपने आप कमरे का ताला खोला। वह यह देखकर हैरान रह गए कि रामकृष्ण की समाधि अचल थी। रामकृष्ण के सांस आ-जा न रहे थे। तोता-गिरि ने होशियारी से उनकी समाधि भंग की। इससे

स्वामी तोतागिरि इतने प्रभावित हुए कि लगभग एक साल तक वहीं रहे।

अब रामकृष्ण को सब लोग परमहंस के नाम से पुकारने लगे। उन्होंने हरेक धर्म की उपासना की थी। वह कहते थे कि जितने धर्म हैं, सबका एक ही सार है—परमात्मा को पाना। हिंदू धर्म के अंदर जितने पंथ और मत हैं, सबके नियमों के अनुसार उन्होंने पूजा की। इस्लाम और ईसाई मत की भी उपासना की। आखिर वह इसी नतीजे पर पहुंचे कि भगवान एक है, मगर उससे मिलने के मार्ग अलग-अलग हैं। जब वह जिस धर्म के अनुसार उपासना करते थे तब उसी धर्म की पुस्तकों की आज्ञा पालन करते थे। तीन दिन तक इस्लाम मत की उपासना की तो मंदिर में नहीं गए। मुंह से हिंदू देवी-देवताओं का नाम तक नहीं लिया। यही बात दूसरे धर्मों की उपासना के संबंध में थी।

एक दिन परमहंस पूजा के लिए फूल तोड़ रहे थे। फूल तोड़ते समय इन्हें लगा कि यह सारी दुनिया भगवान का ही रूप है। फूलों में भी वही समाया हुआ है। उस दिन से परमहंस ने फूल चढ़ाना छोड़ दिया। अब वह मां काली के सामने कभी नाचते, कभी

रामनाम का जाप करते, कभी 'शिव-शिव' कहकर झूमने लगते।

उन्हीं दिनों की बात है। एक सज्जन ने परमहंस की परीक्षा लेनी चाही। मछुआ बाजार में लक्ष्मीबाई नाम की एक वेश्या रहा करती थी। उसीको यह काम सौंपा गया। एक दिन वह सज्जन परमहंस को साथ लेकर उस वेश्या के यहां पहुंचे। एक कमरे में दस-पंद्रह औरतें थीं। वह सज्जन परमहंस को वहां छोड़कर चले गए। उस समय परमहंस के शरीर पर केवल एक चादर थी। उन औरतों ने परमहंस के प्रति तरह-तरह के हाव-भाव दिखलाए। परमहंस एक जगह बैठ गए। उन्होंने उन औरतों को हाथ जोड़कर प्रणाम किया। फिर बोले—"मां आनन्दमयी की जय हो !" इतना कहते ही उनको समाधि लग गई।

जब वह बहुत देर तक समाधि में बैठे रहे तो औरतें डर गईं। कोई पंखा झलने लगी, तो कोई और कुछ करने लगी। उन्हें आशंका हुई कि परमहंस को कुछ हो न गया हो। वे बार-बार उनके चरणों में गिरकर क्षमा मांगने लगीं। कुछको इतना दुःख हुआ कि रोने लगीं। जब इन बातों का उन सज्जन को पता चला तो वह बहुत शर्मिंदा हुए।

इसी तरह एक बार रानी रासमणि ने भी अपनी दासियों से परमहंस की परीक्षा कराई थी। इन परीक्षाओं के बाद परमहंस का नाम दूर-दूर तक फैल गया।

परमहंस ने एक बार भारत के सभी तीर्थों की यात्रा की। वह जहां भी जाते, गरीबों को भोजन और कपड़े बांटते। किसी मंदिर में पहुंचते तो उन्हें अपनी सुध-बुध न रहती। मंदिर के पुजारी तथा दूसरे देखनेवाले हैरान रह जाते कि यह कौन आदमी है, जो भगवान के मंदिर में दर्शन करके इतना मस्ती में आ जाता है कि अपनेको ही भूल जाता है। काशी, प्रयाग, मथुरा आदि अनेक तीर्थों की यात्रा करके वह कलकत्ता वापस आगए। उस समय तक उनका नाम देश के कोने-कोने में पहुंच चुका था। जगन्नाथ और गंगासागर के यात्री वापसी पर परमहंस के दर्शन करने आते। साधु-संत और बड़े-बड़े योगी तक उनके दर्शन करके अपनेको धन्य समझते।

परमहंस बीच-बीच में कभी दक्षिणेश्वर से बाहर भी जाते। कभी अपने गांव कामारपुकुर में पहुंच जाते। एक बार जब वह श्याम बाजार गए तो वहां लगातार सात दिन तक कीर्तन होता रहा। दूर-दूर

तक के लोग वहां आने लगे। कभी-कभी भीड़ इतनी हो जाती थी कि परमहंस को भोजन करने का भी समय न मिलता था। सात दिन बाद वह अपने स्थान पर लौट आए।

एक बार कलकत्ता के किसी सेठ ने परमहंस से कहा, "महाराज, मैं चाहता हूं कि आपके नाम बैंक में कुछ रुपया जमा करवा दूं।" परमहंस ने तत्काल उत्तर दिया, "तुम धन का लोभ देकर मुझे नरक में धकेलना चाहते हो ? भगवात की भक्ति की राह में धन क्या सहायता कर सकता है ? शरीर की रक्षा के लिए धन की ज़रूरत पड़ती है। मां काली की कृपा से मेरा काम चल रहा है।"

परमहंस के भक्तों और शिष्यों की संख्या बहुत बड़ी थी, लेकिन ऐसे शिष्य, जिन्होंने उनसे संन्यास ले लिया था, सोलह थे। उनमें स्वामी विवेकानंद का नाम सबसे अधिक प्रसिद्ध है।

स्वामी विवेकानंद का नाम पहले नरेंद्र था। वह बहुत सुंदर थे। गाने का उन्हें बड़ा शौक था और गला भी सुरीला था। एक बार परमहंस किसी भक्त के घर गए। वहीं उन्होंने विवेकानंद को पहली बार देखा। विवेकानंद ने उन्हें भक्ति के कुछ गीत

सुनाए। तभी से परमहंस के पास उनका आना-जाना शुरू हो गया। परमहंस विवेकानंद को बहुत चाहते थे। एक बार उन्होंने अपने किसी भक्त से कहा, "विवेकानंद मेरा ही दूसरा रूप है। दुनिया में आगे चलकर यह बहुत बड़ा काम करेगा।" एक बार परमहंस ने उनसे कहा, "मैं तुम्हें कुछ सिद्धियां देता हूं। तुम्हें बहुत बड़े काम करने हैं।" विवेकानंद ने जवाब दिया, "मुझे तो केवल ईश्वर-भक्ति चाहिए।" उनकी बात सुनकर परमहंस बहुत खुश हुए।

सन् १८८५ की गर्मियों में परमहंस का गला खराब होगया। काफी इलाज किया गया, लेकिन आराम नहीं हुआ। तब हवा बदलने के विचार से परमहंस को काशीपुर ले गए। यह स्थान शहर से बाहर था। विवेकानंद ने उनकी सेवा का भार स्वयं अपने आप ले लिया। बड़े-बड़े वैद्य और डाक्टरों ने परमहंस का इलाज किया, परंतु उन्हें कुछ भी लाभ नहीं हुआ।

उल्टे उनके शरीर में पीड़ा बढ़ गई। नाड़ी भी ठीक प्रकार से काम नहीं कर रही थी। यह देखकर उनके शिष्य रोने लगे। कुछ देर के बाद परमहंस समाधि में लीन हो गए। उन्होंने विवेकानंद को बुलाया और कहा, "मैंने तुम्हें अपनी सारी पूंजी दे दी। इसके

बल पर तुम दुनिया का बहुत बड़ा उपकार करोगे।"

गले के दर्द ने आगे चलकर गण्डमाला का रूप धारण कर लिया। गले की एक गांठ सूज गई, उसमें जलन होने लगी और पककर उसमें मवाद पड़ गया, पर परमहंस अपनी पीड़ा को भूले रहते थे।

बीमारी बढ़ जाने और भोजन करने में कठिनाई होने के कारण कुछ न खा पाने से वह बहुत कमजोर होगए। सबको बड़ी चिंता हुई। होते-होते बीमारी इतनी बढ़ गई कि मांड़-सी पतली चीज भी उनके गले से न उतरती थी। शरीर सूख गया।

काशीपुर पहुंचने पर पहले तो उन्हें कुछ लाभ होता दिखाई दिया, घाव भर गया, शरीर में भी कुछ शक्ति आई; लेकिन अचानक ऐसा पासा पलटा कि अच्छे-से-अच्छे डाक्टर भी हार मान गए। परमहंस फिर भी प्रसन्न थे। जो उनके पास पहुंच जाता, उसी-से धर्म-चर्चा करते। जब कोई उन्हें बीमारी का डर दिखलाता तो हँसकर कह देते, "देह जाने, दुख जाने; लेकिन मन, तुम आनंद में रहो।"

एक दिन एक पंडित ने उनसे कहा, "समाधि की अवस्था में अगर आप घाव पर थोड़ा ध्यान देंगे तो वह तुरंत ठीक हो जाएगा।"

परमहंस ने हँसकर उत्तर दिया, "तो अब समाधि लगाकर रोग ठीक करना पड़ेगा ?" वह यह भी कहा करते थे कि ऊंची भूमि से उतरकर देह की रक्षा के लिए प्रयत्न करने की इच्छा ही नहीं होती।

इसके बाद भाद्रपद कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा के दिन परमहंस ने अपना शरीर छोड़ दिया। उनकी अर्थी के साथ हजारों लोग हरिनाम कीर्तन करते, मृदंग और शंख बजाते हुए गए। गंगा के तट पर उनका दाह-संस्कार किया गया। उनके फूल तांबे के कलश में रखे गए। सात दिनों तक काशीपुरवाले बाग में कलश की पूजा होती रही। जन्माष्टमी के दिन कांकड़गाघी में वह कलश पृथ्वी में गड्ढा खोदकर रख दिया गया। तब से वहां हर रोज पूजा होती है। दीवाली और जन्माष्टमी पर, साल में दो बार, वहां धूमधाम से उत्सव होता है।

परमहंस के शरीर छोड़ने के कुछ समय बाद स्वामी विवेकानंद अपने कुछ साथी संन्यासियों के साथ देश-विदेशों में धर्म-प्रचार के लिए चले गए। स्वामी विवेकानंद अमरीका पहुंचे। अमरीका में उन्होंने परमहंस का संदेश सुनाया। वहां हजारों लोग हिंदू धर्म और वेदांत के भक्त बन गए। वहां रामकृष्ण

मिशन और वेदांत-सोसाइटियां बनीं।

स्वामी विवेकानंद ने अमरीका से वापस लौटकर हिंदुस्तान भर का दौरा किया। उनके उपदेशों से बहुत-से लोग ईश्वर-भक्त बने। आज भी परमहंस और स्वामी विवेकानंद के उपदेशों से न जाने कितने लोग शांति और आनंद प्राप्त कर रहे हैं।

कलकत्ता के पास गंगा-तट पर बेलूर मठ है। रामकृष्ण-मिशन का प्रधान केंद्र वहीं है। इस मठ पर दस लाख रुपये खर्च हुए हैं। यह सारा रुपया होनोलूलू (अमरीका) की एक महिला ने दिया था। मठ में रामकृष्ण की प्रतिमा है। दोनों समय उनकी पूजा होती है।

रामकृष्ण-मिशन की भारत और विदेशों में सैकड़ों शाखाएं है। मिशन के द्वारा कई प्रकार के लोकोपकारी काम होते हैं। अस्पताल, स्कूल और पुस्तक-प्रकाशन आदि पर लाखों रुपये साल में खर्च होते हैं। सैकड़ों विद्वान संन्यासी रामकृष्ण-मिशन में सेवा-कार्य करते हैं।

: २ :

रामकृष्ण परमहंस के उपदेश

लोहा पारस को छूकर सोना बन जाता है। तब उसे कहीं फेंक दो, वह सोना ही रहेगा। इसी तरह जो आदमी ईश्वर को पा चुका है उसकी भी ठीक वैसी ही दशा है। वह बस्ती में रहे या जंगल में, फिर उसे दाग नहीं लगता।

× × ×

शहद की मक्खी तभी तक फूलों के चारों ओर भंडराती रहती है जबतक उसे शहद नहीं मिलता। शहद मिलने पर वह चुपचाप उसे पीने लगती है। आदमी भी तबतक इधर-उधर भटकता है जबतक भक्ति का रस नहीं मिलता। रस मिलने पर वह चुपचाप साधना में लग जाता है।

× × ×

घर का जो मुखिया होता है, वह किसीका पिता है, किसीका चाचा, किसीका मामा और किसीका और कुछ। इसी तरह परमात्मा एक है, लोग उसकी

उपासना अलग-अलग भाव से करते हैं।

× × ×

बांस की आग को बार-बार फूंक मारनी पड़ती है, नहीं तो वह बुझ जाती है। इसी तरह सदा ईश्वर की उपासना में लगे रहना पड़ता है, नहीं तो किया-कराया योंही रखा रह जाता है।

× × ×

जैसे सपेरा भयानक सांपों को गले में डालकर खेलता है, ईश्वर का भक्त भी प्रभु के चरणों का सहारा लेकर संसार से नहीं डरता।

× × ×

छोटा बालक जैसे खूंटा पकड़कर उसके चारों ओर घूमता है, वह गिरता नहीं, उसी तरह भगवान के चरण पकड़कर संसार में घूमते रहो, गिरने का डर नहीं रहेगा।

× × ×

बच्चा शुरू-शुरू में कई बार गिर-गिरकर उठता है और तब वह चलना सीखता है। साधना के मार्ग में भी इसी तरह बार-बार गिरना और उठना पड़ता है। अंत में राह पर चलना आ जाता है।

चेला 'गुरू-गुरू' कहता हुआ नदी के पार चला गया। गुरू ने सोचा कि मेरे नाम में बड़ा भारी बल है। इस बात का मुझे पता नहीं था। दूसरे दिन गुरू 'मैं-मैं' कहता हुआ नदी में उतरा। मगर वह डूब गया। चेले में विश्वास था तो तर गया, मगर गुरू में अहंकार था, वह डूब गया।

× × ×

बिल्ली अपने बच्चों को दांतों से पकड़ती है, मगर दांत उनके नहीं चुभते। मगर जब बिल्ली चूहों को पकड़ती है तो वे मर जाते हैं। ठीक इसी प्रकार माया भगवान के भक्तों को बचाती है और जो ईमानदार तथा नेक नहीं हैं, उन्हें नष्ट कर देती है।

× × ×

हजार पोथियां पढ़ लो मगर जबतक तुम व्याकुल होकर उसमें डुबकी नहीं लगाते, तबतक तुम कुछ भी नहीं पा सकोगे।

× × ×

संसार एक कच्चे कुंए के समान है। जरा-सी गफलत होने पर गिर पड़ने का खतरा है।

× × ×

जिस प्रकार चावलों का धोवन पीने से शराब का

नशा उतर जाता है, ठीक उसी तरह संतों के सत्संग से माया का नशा उतर जाता है।

× × ×

श्रीराम को पुल बांधकर समुद्र पार करना पड़ा, मगर हनुमानजी 'जय श्रीराम' कहकर समुद्र लांघ गए। विश्वास में बहुत भारी ताकत है।

× × ×

चाहे निराकार हो या साकार, किसी एक पर विश्वास होना चाहिए। ईश्वर के दोनों रूप सत्य हैं। जिसपर विश्वास हो, उसीपर दृढ़ रहो।

× × ×

हाथी चला जाता है, पीछे-पीछे जानवर चिल्लाते रहते हैं। हाथी मुड़कर नहीं देखता। इसी तरह निंदा करनेवालों को ओर नहीं देखना चाहिए।

× × ×

कर्मयोग बड़ा कठिन है। कलि-काल में कर्म करना और भी कठिन है। मनुष्य का प्राण अन्न के अधीन है। वह अधिक कर्म नहीं कर सकता। कलियुग में भक्ति-योग ठीक है। भगवान के नाम का जप करो। प्रभु की कथाओं का गुणगान करो।

थोड़ी-सी विषय-वासना भी रह जाती है तो भगवान के दर्शन नहीं होते। दियासलाई गीली हो तो चाहे जितना घिसो, जलेगी नहीं। विषयों में डूबा व्यक्ति गीली दियासलाई की भांति है।

× × ×

स्तुति और निंदा कौए की कांव-कांव है। जो अभी तारीफ करता है वही बुराई करने लग जाता है। इसलिए किसीकी तारीफ या बुराई करने की ओर ध्यान मत दो।

× × ×

घर-गृहस्थी में रहकर भगवान से लौ लगाए रहो। यह भी करो और वह भी करो।

× × ×

भगवान को एक गुना देकर हजार गुना मिलता है। युधिष्ठर जब श्रीकृष्ण को अपने पाप अर्पण करने लगे तो भीमसेन ने रोक दिया। उसने कहा—"श्रीकृष्ण को पाप अर्पण करोगे तो वह हजार गुना होकर वापस मिलेंगे।"

× × ×

पिंजड़े से पक्षी उड़ जाता है तो कोई पिंजड़े का आदर नहीं करता। इसी तरह शरीर में से जीव निकल

जाता है तो शरीर को कोई नहीं पूछता।

× × ×

किराया दिये बिना सराय में कोई नहीं रहता है। शरीर-रूपी घर का भी किराया देना पड़ता है। शोक, रोग तथा दुख आदि किराया है।

× × ×

नौकरानी मालिक के घर का सब काम-काज करती है; लेकिन उसका मन अपने घर की ओर लगा रहता है। वह मालिक के लड़कों को बहुत खिलाती है, किंतु भलीभांति जानती है कि ये मेरे कोई नहीं हैं। कछुआ पानी में फिरता रहता है किंतु उसका मन अपने अंडों में लगा रहता है। इसी तरह मनुष्य सबकुछ करते हुए भी ईश्वर का खयाल मन से दूर न करे।

× × ×

संसार पानी है और मन दूध। पानी में दूध मिला देने से दूध खालिस नहीं रहता; किंतु मक्खन पानी पर तैरने लगता है, उसमें मिल नहीं जाता। इसीसे निर्जन साधना के द्वारा ज्ञान-भक्ति रूपी मक्खन प्राप्त कर लें; फिर उसको संसार-रूपी जल में डालने पर वह ऊपर तैरता रहेगा।

भले लोगों से मेल-जोल रक्खे और बुरों से दूर रहे। बाघ में भी भगवान है; किंतु कोई उसका आलिंगन नहीं करता। यदि कहो कि बाघ तो नारायण है, भागे क्यों, तो जो लोग भाग जाने के लिए कहते हैं वे भी तो नारायण हैं।

× × ×

किसी तालाब के कई घाट हैं। एक घाट पर हिंदू पानी भरते हैं और उसे जल कहते हैं। दूसरे पर मुसलमान पानी भरते हैं, और उसे पानी कहते हैं। तीसरे पर अंगरेज पानी भरते हैं और वाटर कहते हैं। चीज़ एक ही है, नाम तीन हो गए। भगवान को कोई अल्लाह कहता है, कोई गाड, कोई ब्रह्म कहता है, कोई काली, राम, हरि, ईसा आदि।

× × ×

तुम जगत का उपकार करना चाहते हो। जगत क्या थोड़ी-सी जगह है? और जगत का उपकार करनेवाले तुम होते कौन हो? साधना के द्वारा भगवान का साक्षात्कार करो। उनसे शक्ति मिलने से ही सबका भला कर सकोगे।

× × ×

नमक की पुतली समुद्र की थाह लेने गई। पानी

में उतरते ही गलकर उसमें घुल गई। अब खबर कौन दे? इसी प्रकार पूर्ण ज्ञान होने पर मनुष्य चुप हो जाता है। मैं-रूपी नमक की पुतली सच्चिदानंद-रूप सागर में गलकर एकाकार हो जाती है, रत्तीभर भी भेद-बुद्धि नहीं रह जाती।

× × ×

बिल्ली के बच्चे में तर्क की बुद्धि नहीं होती। वह तो म्याऊं-म्याऊं करके मां को बुलाता है। मां उसे अच्छी या बुरी जगह में जहां रख देती है, वहां पड़ा रहता है। इसी तरह सोलहों आने भगवान का भरोसा करना चाहिए।

× × ×

यदि कोई मुझे गुरू कहता है तो मैं उसे दुत्कार देता हूं। एक सच्चिदानंद के सिवा और कौन गुरू है। वे ही भवसार से पार लगाते हैं।

× × ×

यदि हृदय-मंदिर में भगवान की प्रतिष्ठा करनी हो, उनको प्राप्त करना चाहो तो निरा शंख फूंकने से काम न चलेगा। पहले चित्त शुद्ध होना चाहिए। मन के शुद्ध हो जाने पर भगवान आकर पवित्र आसन पर बैठ जाएंगे। जहां चमगादड़ों की बीट पड़ी होगी

वहां भगवान कैसे आवेंगे ? ग्यारह इंद्रियां ही चमगादड़ हैं।

× × ×

उबले हुए धान को बोने से क्या होगा ? पौदा नहीं उगेगा। मनुष्य ज्ञान की अग्नि में पक जाता है तो उसके द्वारा नई सृष्टि नहीं होती। वह तो मुक्त हो जाता है।

× × ×

मनुष्य की क्या बिसात है। वह बहुत-सी बातें कर सकता है सही, किंतु है सब भगवान के हाथ। वकील कहता है कि जो कुछ कहना था, सब मैंने कह दिया। अब हाकिम की मरज़ी पर है।

× × ×

पैर में कांटा गड़ जाने पर दूसरे कांटे से उसे निकालना पड़ता है। काम हो जाने पर दोनों कांटों को फेंक दिया जाता है। इसी प्रकार अज्ञान-रूपी कांटे को निकालने के लिए ज्ञान-रूपी कांटे की आवश्यकता होती है। अज्ञान का नाश हो जाने पर ज्ञान और अज्ञान दोनों को ही दूर कर देते हैं।

जिसे प्रकाश का ज्ञान है उसे अंधकार का भी ज्ञान है। जिसे सुख का बोध है, उसे दुख का भी बोध है। जिसे पुण्य का ज्ञान है उसे पाप का भी ज्ञान है। जिसे पवित्रता का ज्ञान है उसको अपवित्रता का भी। इसलिए इस झगड़े को छोड़कर विज्ञान का आश्रय ले। विज्ञान का अर्थ है विशेष रूप से जानना। 'लकड़ी में आग है' इस विश्वास का नाम ज्ञान है। उस आग में चावल पकाए जाते, खाए जाते और उससे शरीर हृष्ट-पुष्ट होता है, इस सबका नाम विज्ञान है।

× × ×

अभिमान का विनाश सबसे पहले कर डाले। आत्मज्ञान के द्वार पर अभिमान को एक वृक्ष की भांति मार्ग रोके हुए खड़ा समझना चाहिए। उसको ज्ञानरूपी कुल्हाड़ी से काटकर गिरा डालने से ही परमात्मा के दर्शन मिल सकते हैं।

× × ×

बतख रहती तो पानी में है, किंतु उसपर पानी की एक बूंद भी नहीं ठहरती। यही हाल मुक्त पुरुष का है। वह रहता तो संसार में है, किंतु उससे बिलकुल बेलाग रहता है।

1576

यह संसार कांटों का पेड़ है। कांटा छिद जाएगा तो रक्त निकलेगा। यदि कांटों के पेड़ को लाकर ˆठे-बैठे कहो कि 'यह पेड़ जल जाय,' तो क्या वह जल जाएगा ? ज्ञानाग्नि लाओ, वही आग लगा दो, तब जलेगा।

GANDHI PEACE FOUNDATION
MYSORE CENTRE
162, RAMAVILAS ROAD
MYSORE-1

ಕರ್ನಾಟಕ ಗಾಂಧೀ ಸ್ಮಾರಕ ನಿಧಿ (ರಿ)
ಪರಿಗ್ರಹಣ ಸಂಖ್ಯೆ:
ACC. No.: 9704
ಗಾಂಧೀ ಗ್ರಂಥಾಲಯ, ಬೆಂಗಳೂರು-1

समाज-विकास-माला की पुस्तकें

१. बद्रीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर क बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. निषाद और शबरी
११. गांव सुखी, हम सुखी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुवली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी मेहता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. वे थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कब्रों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा

मूल्य प्रत्येक का छः आना

५३

सस्ता साहित्य मण्डल

छः आना